Chapter - 7

-=: सप्तम अध्याय :=-

: उपसंहार :

-=: उपसंहार और संदर्भिका :=-

§अ§ उपसंहार :-

कमलेश्वर एक अच्छे और सफल कथाकार हैं । और इस सफलता का एक कारण यह है कि उन्होंने अपनी कहानियों व उपन्यासों की विषय वस्तु का चयन अपने आस-पास के परिवेश से किया है । "कहानी में उसकी कलम अपने वक्त की तमाम तकलीफों को संवेदना के स्तर पर चित्रित करती चलती है । मज़मून में इसी कलम से लावा फूटने लगता है । आमतौर पर देखने में आता है कि कोई बड़ा-अच्छा आलोचक या समर्थ निबन्धकार अच्छी कहानी नहीं लिख पाते । लेकिन कमलेश्वर में यह विरोधाभास अचम्भे की हद तक यथार्थ दिखता है । इसीलिए कमलेश्वर का नाम उन लेखकों में अग्रगण्य है जिनकी लेखनी ने अपने युग के नये मोड़ और नयी सोचें प्रदान की है ।"§1§ लेकिन इसका यह अर्थ बिलकुल नहीं कि कमलेश्वर की सभी कथाएं सशक्त व उत्तम कोटि की हैं । उन्होंने सशक्त कहानियों के साथ-साथ कुछ फालतू-सी कहानियां भी लिखी हैं । यदि एक ओर वे नई कहानी के सशक्त कथा आंदोलन से जुड़कर उसमें अपना स्थान बनाते हैं तो दूसरी ओर "समांतर" जैसा निरर्थक कहानी आंदोलन चला कर अपनी प्रतिभा का अपव्यय भी करते हैं । इस कमजोर कथा-आंदोलन को अनेक मजबूत बैसाखियों के सहारे भी खड़ा नहीं कर सके । किंतु यह सब होते हुए भी उन्होंने समय-समय पर सशक्त कहानियां लिखी हैं । लेकिन समांतर के इस दौर में लिखी गयी अच्छी कहानियों को समांतर लेबल की आवश्यकता न थी । अच्छी कहानी किसी भी आंदोलन के झंडे के नीचे आए या न आए, वह एक जीवंत रचना रहती है और खराब या असफल कहानी को कोई भी आंदोलन लोकप्रिय नहीं बना सकता । कमलेश्वर जी के उपन्यासों में प्रेमचन्द की भांति आदर्श के प्रति अत्यधिक आग्रह नहीं दिखता, परन्तु बुद्धि और विवेक के तर्क-वितर्क के उपरान्त कई बार आदर्श का पलड़ा यथार्थ की अपेक्षा भारी पड़ गया है । मानवता के ह्रास, समाज के वर्ग-विशेष के शोषण, सामाजिक वैषम्य एवं उच्छृंखला के प्रति जो एक आह एवं पीड़ा वर्मा जी के उपन्यासों में व्यक्त हुई है, वही आदर्श के प्रति कमलेश्वरजी झुकाव का प्रकाशन कर देती है । इसी प्रकार समाज

---

§1§ सं. मधुकर सिंह "कमलेश्वर" - पृष्ठ-381.

के विभिन्न अंगों एवं कुरीतियों के प्रति जो कमलेश्वर जी के कथा-साहित्य में मिलता है, वह भी उनकी आदर्श-प्रियता का परिचायक है । फिर भी कमलेश्वर जी को प्रेमचन्द की भाँति आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकारों की कोटि में नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि कमलेश्वर जी के उपन्यासों में घटनाओं की अंतिम परिणति आदर्श में दिखलाने की प्रवृत्ति नहीं मिलती और न वैसा आग्रह मिलता है । पात्रों की परिस्थितियों एवं क्रिया-कलापों के अनुसार अकृत्रिम रूप से, आदर्श और यथार्थ में से जो उचित ठहरा है, उसे ही कमलेश्वर जी ने स्वीकार किया है ।

विषयवस्तु की दृष्टि से कमलेश्वर का साहित्य काफी व्यापक है । उनके साहित्य का मुख्य क्षेत्र निम्न वर्ग और निम्न मध्य वर्ग रहा है । इस वर्ग की प्रत्येक समस्या को उन्होंने उभारा है । ऐसा नहीं है, कि शहेरी जीवन को उन्होंने छुआ ही न हो । किंतु उनकी वही रचनाएं अधिक प्रभावी बन सकी है, जहां कस्बे का आदमी शहर आया है । प्रायः कमलेश्वर जी पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने अपने आपको एक विशेष वर्ग तक ही सीमित रखा है । इस संबंध में हमारा मत यह है कि कमलेश्वर जी ने केवल उसी जन-जीवन को अपने उपन्यासों एवं कहानियों में चित्रित किया है, जिसकी नस-नस से वे परिचित रहे है, जिसका चप्पा-चप्पा जिन्होंने देखा-भाला है । इसीलिए उनका चित्रण इतना सजीव एवं यथार्थ बन पड़ा है ।

कमलेश्वर जी के उपन्यासों और कहानियों के पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत सजीव रूप में हुआ है । ये पात्र अधिकतर कस्बे के पात्र हैं । इसीलिये भाषा का रचाव भी कथ्य के अनुसार कस्बे की भाषा के अनुरूप है इसे हम भाषा में मात्र बोल-चाल का ही रंग नहीं कह सकते अपितु पात्रों की मानसिकता के अनुरूप भाषा ढलती चली गई है । और इसी भाषा शैली के द्वारा, कथोपकथन व संवादों के माध्यम से पात्रों का चरित्र-चित्रण हो जाता है । इस प्रकार कमलेश्वर ने कथा और चरित्र में समुचित सामंजस्य स्थापित करके अपने कथा साहित्य को एक विशिष्टता प्रदान की है ।

समाज के यथार्थ चित्रण में कमलेश्वर जी की दृष्टि यथा सम्भव निरपेक्ष रही है । उनके उपन्यासों के विभिन्न मतों को देखकर कभी उनके प्रगतिवादी, तो

कभी प्रतिक्रियावादी होने का भ्रम हो सकता है, किन्तु विभिन्न पात्रों के अनुकूल उनके औचित्य को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि ये विभिन्न मत-मतान्तर कमलेश्वर जी के दृष्टिकोण का प्रकाशन न करके समाज की पृथक-पृथक मनोवृत्तियों का उद्घाटन करते हैं । फिर भी कमलेश्वर जी के पात्र सामाजिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं का जिस प्रकार कटु शब्दों में विरोध करते हैं, उन पर जोरदार प्रहार करते हैं, उसमें कमलेश्वर जी का कुछ अधिक झुकाव प्रगतिवाद की ओर दिखाई पड़ता है, इसीलिए उनके उपन्यासों में अनास्था और नास्तिकता झलकने लगती है ।

इसी अनास्था के कारण कमलेश्वर जी में क्रमशः व्यंग्य-प्रवृत्ति प्रखर होती गई है । उनकी यह व्यंग्य-वृत्ति उनके प्रत्येक उपन्यास में किसी-न-किसी रूप में मिल जाती हैं । कमलेश्वर जी के उपन्यासों में अवसर एवं पात्र के अनुकूल व्यंग्य का रूप बदलता रहता है । कहीं पात्रों के क्रिया-कलाप, वेशभूषा एवं कथन ही उन पर व्यंग्य करते प्रतीत होते हैं और पाठक उसके कारनामों को देख हँसने के लिए विवश हो जाता है, तो कहीं लेखक की टिप्पणी और पात्रों के कथन के द्वारा किसी अन्य पात्र पर व्यंग्य किए गए हैं ।

कमलेश्वर जी के साहित्य के मुख्य विषय आम आदमी के संघर्ष है । जीवन मूल्यों के टूटने का दर्द, पीढ़ियों का अंतराल व संघर्ष, दाम्पत्य सम्बन्धों का बिखराव, विभाजन की विभीषिका और वेश्या जीवन जैसे विषयों में उनका साहित्य बिखरा हुआ है ।

कमलेश्वर ने अपने जीवन में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त किये हैं । बहुत जीवन संघर्षों से उन्हें गुजरना पड़ा है, और इन संघर्षों की स्पष्ट छाप उनके साहित्य में मिलती है । अपने साहित्यिक जीवन में भी उन्हें काफी आलोचना का सामना करना पड़ा है किंतु इन सब विवादों से अलग उन्होंने अपनी सफलता का मार्ग खुद बनाया है । आज पांच दशकों के निरंतर लेखन ने उनके शिल्प को निखार दिया है, लेखन-शैली को मांज दिया है । और अपनी मौलिक प्रतिभा से वे आज भी हिन्दी साहित्य के भंडार को सम्पन्न करते जा रहे है ।

कमलेश्वर जी ने अपने जीवन में बसन्त की मधुरिमा, शिशिर के कंपन

एवं ग्रीष्म की जलन का अनुभव किया है । भीषण जीवन-संघर्षों में से उन्हें गुजरना पड़ा है, किन्तु उस उद्यमी "व्यक्ति" ने सफलता के चरम सोपान पर पहुँचकर भी विश्राम नहीं लिया । अपने साहित्यिक जीवन में उन्हें आलोचना का कड़वा घूंट भी पीना पड़ा है, किन्तु इस आलोचना-प्रत्यालोचना के विवाद से परे वे अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ते रहे हैं । अपने निजी प्रयत्न एवं लगन के द्वारा उन्होंने अपनी सफलता का मार्ग बनाया है । पाँच दशक के अंतराल में भी कमलेश्वरजी के शिल्प और भाषा में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन तो नहीं आया, किन्तु उनकी कला अधिक मँज गई, उसमें अधिक निखार आया । उनकी जीवन-दृष्टि भी अपरिवर्तित एवं अटल रही है, वरन् उस संबंध में कमलेश्वर जी अधिक दृढ़ हो गए हैं । कमलेश्वर जी के कथा-साहित्य में एक विशेष देश-काल का चित्रण हुआ है, किन्तु मानव की चिरंतन वृत्तियाँ उसमें खूब उभरी हैं, इसलिए पाठकों को चिरकाल तक आकर्षित करने की संभावना उसमें विद्यमान है । अपनी मौलिक प्रतिभा से कमलेश्वर जी ने हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान उपलब्ध किया है और साहित्य के भण्डार को सम्पन्न किया है ।